ग्रन्थमाला ‘आध्यात्मिक उपचार’ : कुदृष्टि – खण्ड २

कर्पूर, काली उडद, पानका पत्ता आदि से कुदृष्टि कैसे उतारें ?

(रोगी एवं शिशु की कुदृष्टि उतारनेसहित)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ एवं अन्य

सनातन संस्था

सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

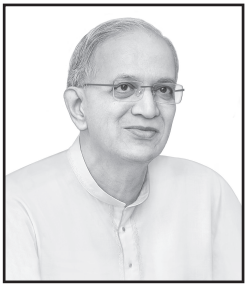

१. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला' के विषयमें मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

२. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

३. शारीरिक एवं मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

४. १०.५.२०२३ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २३४ और अन्य ९२३ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

५. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी) देह तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले

१८.५.१९९६

सनातनके सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंकी अद्वितीयता !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधक पृथ्वीपर कहीं भी उपलब्ध नहीं, ऐसे अध्यात्मके विविध विषयोंपर गहन अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करते हैं । वर्ष २००३ से उन्हें मिलनेवाला यह ज्ञान सनातनके लगभग ६० से अधिक ग्रन्थोंमें लिया गया है । ईश्वरसे प्राप्त यह ज्ञान ग्रहण करनेके लिए उन साधकोंको अनिष्ट शक्तियों के आक्रमणोंका भी सामना करना पडता है । ऐसा होते हुए भी गुरुकृपाके बलपर वे यह सेवा करते ही हैं ।

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण शीर्षक आगे दिए गए हैं ।)

१. कुदृष्टि उतारनेकी पद्धति (केवल कृत्य) ९

१ अ. कुदृष्टिग्रस्त व्यक्ति उपस्थित होनेपर ९

१ आ. कुदृष्टि उतारनेवाला व्यक्ति उपस्थित न होनेपर ११

२. कुदृष्टि उतारने हेतु प्रयुक्त घटक तथा उनके द्वारा कुदृष्टि उतारनेकी विविध पद्धतियां १३

२ अ. कर्पूर १३

२ आ. काली उडद खाद्य तेलमें डालकर उसमें अपना मुख देखना और वह तेल हनुमानजीके देवालयमें चढाना १६

२ इ. पानके पत्तेसे कुदृष्टि उतारना १८

२ ई. चावल और पानी से कुदृष्टि उतारना २१

२ उ. पादत्राणसे (चप्पलसे) कुदृष्टि उतारना २३

२ ऊ. ताडके पत्तेसे बने छोटे झाडूसे कुदृष्टि उतारना २५

२ ए. रातभर तुलसीके समीप रखा जल अगले दिन सवेरे प्राशन करना २७

२ ऐ. मिट्टीकी मटकी और पानीके लोटे से कुदृष्टि उतारना २७

२ ओ. अनिष्ट शक्तियोंसे पीडित व्यक्तिके कष्टके निवारण हेतु मोरपंखका उपयोग करना ३१

२ औ. भोजनकी कुदृष्टि उतारना ३१

२ अं. कुदृष्टि उतारने हेतु उपयुक्त अन्य घटक ३२

३. रोगीकी कुदृष्टि उतारना, उसके लिए उतारा देना अथवा कुछ आवश्यक आध्यात्मिक उपचार ४१

४. छायाचित्रके माध्यमसे कुदृष्टि उतारना, कागजपर नाम लिखकर कुदृष्टि उतारना व नामका उच्चारण कर कुदृष्टि उतारनेका मूल शास्त्र ४३

४ अ. छायाचित्रके माध्यमसे कुदृष्टि उतारना ४३

४ आ. व्यक्तिका छायाचित्र उपलब्ध न हो, तो उसका नाम एक कागदपर लिखकर उस कागदकी कुदृष्टि उतारना ४६

४ इ. व्यक्तिका छायाचित्र अथवा उसका नाम लिखा कागज न होनेपर उसके नामका उच्चारण कर कुदृष्टि उतारना ४७

५. शिशुकी कुदृष्टि उतारना ४८

६. कुदृष्टिग्रस्त साधिकाको विविध साधकोंद्वारा उतारी गई कुदृष्टि एवं एक सन्तके बताए अनुसार उतारी गई कुदृष्टिमें प्रतीत हुआ परिणाम ६३

७. कुदृष्टि उतारनेवालेका आध्यात्मिक स्तर, कुदृष्टि उतारते समय विशिष्ट स्तरपर होनेवाला परिणाम एवं कुदृष्टि उतारनेके उपरान्त प्रभावित अनिष्ट शक्तियोंका स्तर ६६

८. कुदृष्टि उतारनेपर करनी करनेवालेपर होनेवाला परिणाम ६८

भूमिका

वर्तमान प्रतियोगिता और भोगवादी युगमें अधिकांश व्यक्ति ईर्ष्या, द्वेषभाव, लोकैषणा, विपरीत लिंगकी ओर अनिष्ट दृष्टिसे देखने आदि विकृतियोंसे ग्रस्त होते हैं । इन विकृतिजन्य रज-तमात्मक स्पन्दनोंका कष्टदायक परिणाम सूक्ष्म रूपसे अनजानेमें दूसरे व्यक्तियोंपर होता है । इसे ही उस व्यक्तिको 'कुदृष्टि लगना' कहते हैं । इसी प्रकार परिवारमें झगडा होना, व्याधि, आर्थिक समस्या, बुरे सपने दिखाई देना, निराशा, धूम्रपान (सिगरेट)की लत, मद्यका व्यसन जैसी समस्याएं अब सामान्य बात हो गई है । वर्तमानमें जीवनकी ८० प्रतिशत समस्याओंका कारण स्थूल रूपसे दिखाई देता हो, तो भी वास्तविक कारण सूक्ष्म, अर्थात अनिष्ट शक्तियोंकी पीडा ही है । अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट, कुदृष्टि लगनेका ही एक प्रकार है ।

कुदृष्टिसे रक्षा होने हेतु इस ग्रन्थमें कुदृष्टि उतारनेकी विविध पद्धतियां बताई गई हैं । 'इस सन्दर्भमें सभीके लिए यह ग्रन्थ अधिकाधिक उपयुक्त हो', यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

निद्रासम्बन्धी निसर्गनियम और आचार बतानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

शान्त निद्राके लिए क्या करें ?

* आयुर्वेदानुसार कब सोएं और कब न सोएं ?
* पीठ अथवा पेट के बल क्यों न सोएं ?
* दक्षिणोत्तर नहीं, पूर्व-पश्चिम क्यों सोएं ?
* सोनेसे पूर्व क्या प्रार्थना करें ?
* शयनगृहमें रातको पूरा अंधेरा क्यों न हो ?
* अनिष्ट शक्तियोंसे रक्षा हेतु कौनसे आध्यात्मिक उपचार करें ?